

199

१५१
हमवक्रसार्द्धगहापिज्ञमुत्पादिताना
जर कु तव



नासिपयसोहितस्तिमत्वाभुस्तत्सार्द्धगहा

ॐ श्रीगोशायनमः॥

अथ श्रीस्तोत्रं नारायणो जी॥ प्रथी जीली जय अहेरंग
तकानाम॥ जी होवन सभी काम पूरन तमा म॥

कौबीतीदासकरहरध्यान॥ जो फि पा करे सा पंगत ही
ही हा ही हा ही हर हरि॥ मेरे वीर कर्म देर इतनी करी॥

ब्रह्मविश्वनाथ जी हैं डक हो स्वरूप॥ हुये एक ही रूप तो नां स
रूप॥ जी सा जा सरी रूप अनेक रूप॥ जो बे सो जी रें की महां
करी॥ हरि हर हरि हर हरि हर हरि॥ मेरे वीर कर्म देर इतनी करी॥

शक्तो मे रूपे और मने शक्ति॥ ररथानाम अपना महां इश्वरे
जो गोचर मुनीर पने उवर रखे॥ मेरे जूत मेरे पर मे प्रथी॥

हरि हर हरि हर हरि हरि॥ मेरे वीर कर्म देर इतनी करी॥

ठेराना म दुःख हारा दे दी नाथ॥ जो बर सनत गाई दू सने

कसाथ॥ ररथानाम गवा तो को गिर धर कहाय॥ वहां नाम स

ना ररथाना थो॥ हरि हर हरि हर हरि हरि॥ मेरे वीर कर्म

देर इतनी करी॥ महरने नाथाना प्रह्लाद को॥

नदी डोभगतने तेरी बाढ़ को॥ न की तील बफ का हनु के बा
 को॥ किया रूप नर सिद्ध पड़ा हो हरी॥ हरी हर हरी हर हरी
 हर हरी॥ मेरे वीर क्यूँ देर दूनी करी॥ न ही दोड़तारा
 का बिजि कर॥ गुस्से हो के बांधे था उन को पिड़॥ लो
 हा फरुं मैं जुहा तन से सर॥ दहों से जो निकले थे यम फं
 ड कर॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी॥ मेरे वीर क्यूँ देर दूनी
 के से जल दूध पारि लावे के धीर॥ हरना को नाराय न ला
 है दे॥ किया रूप बावन ब्रह्म न का फेर॥ नल के दोरे ग्रा
 ठे हरी॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी॥ मेरे वीर क्यूँ देर दूनी
 करी॥ जो जल बोडने राज को घेरा जमई॥ न ले न
 था उस नाम तेरा कभी॥ जो जंगल बने सदन मयूब
 हरी रूप हो कर के पेड़ा हरी॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी॥
 गंगा बल की नारायना कुल की नी दे॥ यस्य प्रमसि
 टे के न हने के बेर॥ करे बहत क्रपा जो गंगा वेद॥
 सुदामा का सब दिल ददर है॥ हरी हर हरी हर हरी
 हरी हरी हरी॥

नया मिले कवक से के हरी ॥ मेरी देह लारी चो पापों भरी ॥ जो
 लिसने मेरे न भयो धुन धरी ॥ न राखें तूं मुझ निन कि सी की
 सड़ी ॥ हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे वीर कपू देर दूत नी करी
 नर सी भगन दुक हंडी करी ॥ सावन ग्राह ऊपर से उस खिचरी
 दुह न जल फेरि नै नगी ॥ सावन ग्राह हो उस की हंडी फिरी ॥ हरी हर
 हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे वीर कपू देर दूत नी करी ॥ बखी ऊंट नै न
 पदु पाया सई ॥ न सुती कबू बहत अब भये ॥ सिर ऊत पुत्री म
 ने नई ॥ कपूर परे राइ प्रसर रखे करी ॥ हरी हर हरी ॥ मेरे वीर कपू
 देर दूत नी करी ॥ जब से ज्याह गरी हर को दुःख दिया ॥ यो हवा न धने
 नाम तेरा लिया ॥ जेतदा मसया दुआ हइ सगया ॥ दुख ले भोग मा की हर
 हरी ॥ मेरे वीर कपू देर दूत नी करी ॥ जो रावन उमर जुव सिया ले गया ॥ सत
 मपनी ज्ञाये दीह ॥ सरजा भभी कन गया ॥ सिया को साई मयु या फी
 हरी हर हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे वीर कपू देर दूत नी करी ॥ जो ते सने सा दिल स
 की वद दुहा दी ॥ वसी पवन प्रहिया हवा हो गई ॥ परीयो वीर से जानु वत
 न ॥ पान ॥ के उस के पकड़ जा रही ॥ हरी हर हरी हर हरी सहरि ॥ ते

सतनामसतनामके दोहा- अहंमंकेयोहैकेनाया- ब्रह्मांजापकेस
 लजाकरपया- सनुपसपहोबेरुतयेहरी- हरीहरहरीहरहरीहरहरी
 भैरवीरकपूंदरदुनीकरी- जगन्नामोरेअर्जनकाबुद्धगोपाप- हुये
 जुजजीउनकोसगपउखलसीतीनायपहंयेजोअप- उखलसा
 तहीउनकोतपपदाहरी- ॥ हरीहरहरीहरहरीहरहरी- मेरेवीरकपूंदरद
 हरीपतकेकेरीजुलनजोरसाध- ओतामलनेपीरतयअपनेहाथचप
 याददोपतगुकेदीनानाय- रबीशर्मउसकीनगनकरी- हरीहरर
 वोहहैयादनुमकोजीरसकुंकेवार- जीवपनेआयायाजिनारदार- चढे
 नाथरथपहुयेवेस्वार- रकनबांधरमकुनलेआयहरी- हरीहरर
 अहंमंकेयोहैकेनाया- गसोवसशयोकीफिरावनलगा- धर
 नहायपरिवकेअछाकरी- अकतरुपहोशबकेअछाकरी- हरीर
 हस्यागगियामेखकेगंडोसपास- पूहनगनकेजोकीनीधीआम
 तबराजाहकहतकीइहाकरी- अहांनायपांडोकीइहाकरी- हरी
 जोदहनीमगतनेमोंगठादुरगिया- यस्नोचननिमकेवेहादिव
 भगनगास्नमंचीदरहरी- पूचमपियापरतेबनीआहरी-
 हरीहरहरीहरहरीहरहरी- ॥ मेरेवीरकपूंदरदुनीकरी

(५)

जो दुष्ट तर परजब को पकी रोह झा के हर दो तरफ जंग आ कर हू आ
 बने खून का संधै हने लगा तो तेरे वचन की राख करी हरी हर
 हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे वीर कपू देर इनी करी मेरे संत को कोई पावे
 कहा ॥ माथो दास को जाड़ा लागा जहां स्वर नात ही कले पहेंचे व
 हं छपर बांध कर उसकी रखी य करी हरी हर ॥ गरुड़ की सवारी पे
 प्रवत कर रहा ॥ बड़ा दहत सज्जु व ह म को हुआ कड़ुह गर्म कर ने त
 जव की पढ़ा सुदामा को सा कर बचाया हरी हरी हर ॥ बड़ा राष
 शो का जल मया जहां रसे ध्वर तपे ध्वर सुदा बे निशां मोर बत
 स्वर खड्ग पशु सां हरी कृपा करी बेड़ा भगातां हरी हरी हर हरी
 धादी बे सखुन साता का बेश कर चले घर से बाहेत रो आ सपर
 लगे भजन करे तब डक पाउं पर दया दास उस की गले ला हरी हु
 त सी उमर कंस दश मन रहा पलक में तू उस का उदार बकिया
 जंघर सेन को राज मयूर दिख ॥ सह पीन का पेठ जो आवे हरी
 लिपा पकी उस की पती गर्दन ही डक ह म कल करनी पड़ी
 निखे मुख से जा उस के मेरा करी निख कुं द से हर खरे कुं द का क
 री ॥ हरी हर हरी हर हरी हरी ॥ मेरे वीर कपू देर इनी करी ॥

जो की सांसे से हल लिया मुड़ये वा लगे देखने लगे आई धर ऊपर न
 ग्रन्थ रहै स्वकी सां उपर राधा पावे पर साधी करी हरी हर हर हर
 हरी हर हर मेरे धर कपड़े रहनी करी राजने पकड़ जे हि का
 तिल दिया ॥ जो पीये तो उसकी नदी दे जिया बैरान ने ने राजा स
 ले कर दिया उने यख से चाऊ की मुल न किया हरी हर जो उठ
 सिद्ध जो ऊपर चोखी सो हुजार रखि बहुत राजा जरा संद नार वहु
 वक्त तंगी जा की नी पुकार उसी वक्त उन की जाय पना हरी हरी हर
 सुना नाथ जी नाम तेरा भया यहै नाम मन दास सरने पया ॥ ३ ॥
 ने नाम की लाज राखी हरी मेरे दुख सभी काट ऐ दुख हरी हरी हर
 तू है गाविरा दरबली राम का मेरा खूंभरी सा तेरे नाम का नही कोई
 हुआ तेरी शाबका नही है जगत की चकला हरी हरी हर हर हर
 मेरी गज सुंयो तो गोपाल जी तगा फुल का नहीं ब्रह्म गोपाल जी
 तिम भक्तो दुःख से शहात जी तेरे बिन मेरा को न है
 दुःख हरी हरी हर हर हर हर हर नीरी दी कपड़े रहनी करी
 ने है जगत की चतार नन एन तू ही है संगत सर सठ बाप रां

[illegible]

मुसताफाई प्रसलाहो रने छपा